क्रो एवं क्रो के अनुसार– "सृजनशीलता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।"

"Creativity is a mental process to express the original outcomes."

Crow and Crow

कोल और ब्रूस के शब्दों में– "सृजनशीलता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने, व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है।"

"Creativity is an ability and activity of man's mind to grasp, express and appreciate in the form of an original product."

Cole and Bruce

उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सृजनशीलता का सम्बन्ध प्रमुख रूप से मौलिकता व नवीनता से है। किसी समस्या पर नये ढंग से सोचने तथा समाधान खोजने के प्रयास से सृजनात्मकता परिलक्षित होती है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि सृजनशीलता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विद्वतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने, विचार करने तथा कार्य करने में समर्थ बनाती है। अतः प्रचलित ढंग से हटकर किसी नये ढंग से चिन्तन-मनन करने तथा कार्य करने की योग्यता ही सृजनशीलता कही जा सकती है।

सृजनशीलता के तत्व
(Elements of Creativity)

सृजनशीलता की परिभाषाओं के अवलोकन तथा विश्लेषण से ज्ञात होता है कि सृजनशीलता को संवेदनशीलता, जिज्ञासा, कल्पना, मौलिकता, खोजपरकता, लचीलापन, प्रवाह, विस्तृतता, नवीनता आदि के संदर्भ में समझा जा सकता है। सृजनशीलता के कुछ समानार्थी यह विभिन्न संप्रत्यय वैज्ञानिक अनुसंधानों, कलाकृतियों, संगीत, रचना, लेखन व काव्य कला, चित्रकला, भवन निर्माण आदि सृजनशील कार्यों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। वस्तुतः सृजनशीलता के चार प्रमुख तत्व होते हैं जिन्हें निम्नवत् ढंग से व्यक्त किया जा सकता है–

(i) **प्रवाह** (Fluency)– प्रवाह से तात्पर्य किसी दी गयी समस्या पर अधिकाधिक विचारों या प्रत्युत्तरों या अनुक्रियाओं को प्रस्तुत करने से है। प्रवाह को पुनः चार भागों– वैचारिक प्रवाह (Ideational Fluency), अभिव्यक्ति प्रवाह (Expressional Fluency), साहचर्य प्रवाह (Associative Fluency) तथा शब्द प्रवाह (Word fluency) में बाँटा जा सकता है। वैचारिक प्रवाह में विचारों के स्वतंत्र प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे किसी कहानी के अनेकानेक शीर्षक बताना, किसी वस्तु के अनेकानेक उपयोग बताना, किसी वस्तु को सुधारने के अनेकानेक तरीके बताना आदि आदि। अभिव्यक्ति प्रवाह में मानवीय अभिव्यक्तियों के स्वतंत्र प्रस्फुटन को प्रोत्साहित किया जाता है। जैसे दिये गये चार शब्दों से वाक्य बनाना, दिये गये अपूर्ण वाक्य को पूरा करना आदि आदि। साहचर्य प्रवाह से तात्पर्य दिये गये शब्दों या वस्तुओं में परस्पर साहचर्य स्थापित करने से है। जैसे किसी दिये गये शब्द के अधिकाधिक पर्यायवाची या विलोम शब्द लिखना आदि। शब्द प्रवाह का सम्बन्ध शब्दों से होता है। जैसे दिये गये प्रत्ययों तथा उपसर्गों (Prefix and Suffix) से शब्दों को बनाना आदि। किसी व्यक्ति के द्वारा किसी सृजनशील परीक्षण के किसी पद (Item) पर प्रवाह को प्रायः उस पद पर दिये गये प्रत्युत्तरों की संख्या से व्यक्त किया जाता है। परीक्षण पर व्यक्ति के कुल प्रवाह प्राप्तांक को ज्ञात करने के लिए सभी पदों के प्रवाह अंकों का योग कर लिया जाता है।

(ii) **विविधता** (Flexibility)– विविधता से अभिप्राय किसी समस्या पर दिये प्रत्युत्तरों या विकल्पों में विविधता के होने से है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति के द्वारा प्रस्तुत किये गये विकल्प या प्रत्युत्तर एक दूसरे से कितने भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। विविधता की तीन विमाएँ– आकृति स्वतः स्फूर्त विविधता (Figural Spontaneous Flexibility), आकृति अनुकूलन विविधता (Figural Adaptive Flexibility) तथा स्वतः स्फूर्त विविधता (Semantic Spontaneous Flexibility) हो सकती है। आकृति स्वतः स्फूर्त विविधता से तात्पर्य किसी वस्तु या आकृति में सुधार या परिमार्जन करने के उपायों की विविधता से होता है। आकृति अनुकूलन विविधता से अभिप्राय किसी वस्तु या आकृति के रूप में परिवर्तित करने